हिन्दी विभाग
स्नातकोत्तर तृतीय सत्रार्द्ध
पत्र संख्या :- X

दिनांक
28/04/2023

जैराम कुमार
(अतिथि शिक्षक)

कामायनी (जयशंकर प्रसाद)

प्रश्न :- कामायनी में जयशंकर प्रसाद की काव्य कला पर विचार कीजिए ?

उत्तर :- हिन्दी के मूर्धन्य उपन्यासकार जैनेन्द्र कुमार ने जयशंकर प्रसाद की पहचान "हमारे साहित्य के पहले महान स्वतंत्रचेता" के रूप में की है। कवि, नाटककार, उपन्यासकार, कहानी लेखक जयशंकर प्रसाद की काव्य कल्पना सदैव उनके निजीजीवन - अनुभवों तथा अन्वीक्षणों से संभावित तथा संचरित रही है। प्रसाद का एक जीवन दर्शन है जो भारतीय इतिहास प्रवाह में अर्जित, गँवाई गई तथा फिर से प्राप्त नैतिक, सौन्दर्यात्मक, व्यावहारिक तथा रहस्यात्मक अंतर्दृष्टियों का समन्वय करने का साहित्यिक प्रयास है जो उनके काव्य - फलक पर रह - रहकर झलकती रहती है। प्रसाद के कृतित्व में उनके रचनात्मक विकास के तीन सोपान है। काव्य रचनाओं में चित्राधार, कानन-कुसुम, महाराणा का महत्व और प्रेमपथिक पहले दौर के अन्तर्गत आएंगे। दूसरा दौर 'झरना' के प्रकाशन से प्रारंभ होता है जिसमें प्रसाद ने अपनी विशिष्ट पहचान कायम की है। सर्जना की दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण है। तीसरा दौर उनके जीवन काल के अंतिम एक दशक में विस्तीर्ण है। इसी अवधि में आँसू, लहर और प्रसाद की कालजयी रचना कामायनी का प्रणयन हुआ। प्रसाद ने अपने काव्य की विशिष्ट अनुभूतियों के प्रयोग

से हिन्दी साहित्य में एक नए युग का सूत्रपात किया, जिसे छायावाद के नाम से जाना जाता है। प्रारंभ में छायावाद एक व्यंग्यात्मक अभिधान था किन्तु अब इसकी अपनी स्पष्ट पहचान हो चुकी है। छायावाद का एक प्रमुख लेखक होने के नाते प्रसाद के काव्य में प्रायः छायावाद की सभी विशेषताएँ उपलब्ध हुई हैं- (1) राष्ट्रीय भावना, (2) प्रकृति प्रेम, (3) मानवीय भावना, (4) शृंगार और प्रेम (5) वेदना और करुणा (6) मानवता (7) रहस्यवाद (8) आनंदवाद (9) समन्वय, निर्माणवाद।

कला पक्ष :- अनुभूति की सूक्ष्मता और जटिलता की अभिव्यक्ति के लिए छायावादी कवियों ने नयी कला विधियाँ विकसित की। इनमें प्रतीक बिम्ब, चित्रात्मकता, लाक्षणिकता, उपचार-वक्रता, नाद-सौन्दर्य, मानवीकरण, नवीन अप्रस्तुत विधान और नूतन छंदों का प्रयोग प्रमुख है।

(1) भाषा-शैली :- छायावादी कवियों ने हिन्दी साहित्य को चित्रोपम भाषा-शैली प्रदान की है। कवि भावानुकूल शब्दों के प्रयोग से वस्तु स्थिति का स्वाभाविक दृश्य पाठक की आँखों में उतार देता है। प्रसाद जी ने कामायनी में ऐसे अनेक बिम्बों का सँश्लिष्ट चित्र प्रस्तुत किया है-

दिग्दाहों से धूम उठे या जलधर उठे क्षितिज तट के।
सघन गगन में भीम प्रकंपन झंझा के चलते झटके॥

(2) प्रतीक विधान :- मानव मन के सूक्ष्म मनोभावों, चेष्टाओं को प्रस्तुत करने के लिए प्रसाद जी ने सर्वथा नवीन प्रतीकों का सृजन किया है- प्रसाद के काव्य में प्रतीक के रूप में प्रयुक्त नूतन शब्दों की संख्या विशाल है।

उषा - सुख, मधुकाल - बसंत, मधुप के प्रिया आदि।
कविवर प्रसाद की उर्वर कल्पना में नये प्रतीकों का जन्म हुआ है। कामायनी की नायिका श्रद्धा के सौन्दर्य चित्रण में प्रसाद जी ने बिजली के फूल का उपमान गढ़ा है-

नील परिधान बीच सुकुमार,
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।
खिला हो ज्यों बिजली का फूल,
मेघ वन बीच गुलाबी रंग।।

(3) लाक्षणिकता :- कविता में माधुर्य रस घोलने के लिए प्रसाद जी ने लक्षणा शक्ति को सर्वथा समर्थ और समीचीन पाया है। श्रद्धा के चेहरे की मुस्कान की मादकता को कवि ने इन शब्दों में उपबद्ध किया है-

और उस मुख पर वह मुस्कान
रक्त किसलय पर ले विश्राम,
अरुण की एक किरण अम्लान
अधिक अलसाई हो अभिराम।।

नयनाभिराम सौन्दर्य राशि को समेटने के लिए अरुण की एक अम्लान किरण के रक्त किसलय पर विश्राम का प्रतीक लाया। बड़ा मनोहारी है।

(4) नाद सौन्दर्य :- आचार्य शुक्ल का कहना है कि नादात्मक सौन्दर्य कविता की आयु को बढ़ाता है। प्रसाद के मानस तरंगिणी की लहरों का गान स्पष्ट सुना जा सकता है। यद्यपि ऐसे स्थलों की संख्या अनेक है तथापि निम्न पंक्तियाँ :- कंकण क्वणित रणित नूपुर थे
सघन गगन में भीम प्रकंपन, झंझा के चलते झटके आदि

(5) आलंकारिकता :- प्राचीन अलंकारिक प्रयोग की परंपरा से आगे बढ़कर छायावादी कवियों ने पाश्चात्य काव्यालंकार का हिन्दी साहित्य में प्रवर्तन किया। ये है - मानवीकरण, विशेषण-विपर्यय और ध्वन्यार्थ व्यंजना। मानवीकरण सम्पूर्ण छायावादी काल का बहु प्रयुक्त अलंकार है। प्रसादजी ने प्रकृति चित्रण में प्रायः इसका उपयोग किया है-

सिन्धु सेज पर धरा वधु अब,
तनिक संकुचित बैठी-सी।
प्रलय निशा की हलचल स्मृति में,
मान किये सी ऐंठी सी॥

(6) छंद योजना :- निराला के नेतृत्व में छायावादी काव्य परंपरागत शास्त्रीय बंधनों से मुक्त हुआ और कवि स्वच्छंद होकर रचनाएँ करने लगे। कुछ नये प्रकार के छंद भी विकसित हुए। प्रसाद ने भी तुकांत और अन्त्यानुप्रास छंदों के अलावा अतुकांत और अमिताक्षरी वाले छंदों का प्रयोग किया। कामायनी में प्रसाद ने इड़ा सर्ग में अर्ध तथा आनंद सर्ग में पूर्णतया नवीन छंदों का सृजन किया है।

प्रस्तुतकर्ता
बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राजनारायण महाविद्यालय हाजीपुर
(BRABU MUZAFFARPUR)
मो० नं० - 8292227041
ईमेल :- benamkumar13@gmail.com

दिनांक
26/08/2020